

कक्षा आठवीं, हस्त-पत्रक, 2/3
Module – (Handout - 2/3)
श्री हरि शंकर त्रिपाठी, टी.जी.टी.(एस.एस.)
ए.ई.सी.एस. -2, मुम्बई.
विषय – हिन्दी
पाठ-10 कामचोर
लेखिका – इस्मत चुगताई

भाग-2

कहानी के इस भाग में कहानीकार के अनुसार अब बच्चों को पौधों में पानी देने का खयाल आया। सारे बर्तन बाल्टियाँ, लोटे, तसले भगोने आदि लेकर 'पहले हम----पहले हम' के स्वर में चीखते नल की ओर भागे। कुछ तो कटोरे-गिलास लेकर ही दौड़े। देखते-देखते वे एक-दूसरे को धक्का देने लगे फिर कुहनियाँ और अंत में बर्तनों से मार-पीट करने लगे। इससे सारे बच्चे कीचड़ से लथपथ हो गए। तब नौकरों द्वारा चार आने प्रति बच्चे के हिसाब से नहलवाया गया।

शाम को मुर्गियों को दड़बे में लाने की सोची। उन्होंने बाँस की छड़ी उठा ली। मुर्गियाँ दड़बे में जाने के बजाय इधर-उधर कूदने लगीं। दो मुर्गियाँ खीर के प्यालों के ऊपर से निकल गईं।





एक मुर्गा अम्मा के पानदान में कूद पड़ा जिससे दूध-सी सफ़ेद चादर गंदी हो गई। एक मुर्गी दाल की पतीली में छपाक मारकर कीचड़ में फिसल गई। सारी कीचड़ मौसी के सिर में लगी।

फिर बच्चों ने भेड़ों को दाना खिलाने की सोची। दिन भर की भूखी भेड़ें दाने के सूप देखते ही बेकाबू होकर तख्त पर चढ़ गईं। भेड़ें दाने के पीछे भागते-भागते सोती हज्जन माँ के ऊपर से दौड़ गईं। देखते-देखते वे तरकारीवाली की मटर की फलियों से भरी टोकरी पर टूट पड़ीं। सारी तरकारी भी भेड़ें तुरन्त चट कर गईं।



